वृत्तपत्राचे नांव :- दैनिक जागरण
वृत्तपत्र प्रकाशन ठिकाण :- कानपुर
वृत्तपत्र पान नं.:- 14
दिनांक :- 29-01-2008
कटिंग नंबर: .....

वैदिक परंपरा

डा. रमराज उपाध्याय

भारतीय संस्कृति का मूल स्रोत वेदों को माना जाता है। वेदों में विश्व वांगमय की अमूल्य निधि छिपी हुई है। वैदिक संस्कृति संसार के समस्त प्राणियों के लिए कल्याणकारी चिंतन प्रस्तुत करती है। प्रथम वेद ऋग्वेद का प्रसिद्ध मन्त्र **'स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव। पुनर्ददताघ्नता जानता सं गमेमहि'** में वेद भगवान की कामना है कि स्वस्ति यानी कल्याणकारी पथों का हम सभी अनुकरण करें। स्वस्ति शब्द की व्याख्या में आशी:, क्षेमम् मिलता है। यहाँ कल्याण का प्रथम संकेत आशीर्वाद की ओर जाता है। आशीर्वाद एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें किसी के कल्याण के लिए मन से भावना की जाती है। अर्थात् यह एक आभ्यन्तरिक कामना है और यह कामना जितना कल्याणकारी है उतना कल्याणकारी अन्य कोई उपाय नहीं है। वैदिक परम्परा कहती है कि संसार के समस्त प्राणियों को परस्पर एक दूसरे के कल्याण का चिन्तन करना चाहिए। वेद का प्रसिद्ध मन्त्र **'देहि मे ददामि ते'** से यह बात स्पष्टतया प्रमाणित होती है कि तुम मुझे दो और मैं तुझे दूं। प्रश्न उठता है क्या देना। उत्तर मिलता है जो देने लायक हो। यानी तुम समाज को या किसी दूसरे को क्या देने लायक हो। जो देने लायक हो उससे समाज की सेवा करो और समाज भी जो कुछ देने लायक होगा, वह प्रदान करेगा। श्रीमदभगवद्गीता में भी **'परस्परं भवयन्त:'** की व्याख्या करते हुए अर्जुन से भगवान श्रीकृष्ण ने कहा कि हमें एक दूसरे की भावनाओं को समझना चाहिए। एक दूसरे के साथ सहयोगात्मक प्रकृति से सुपथ की ओर अग्रसर होना चाहिए। वर्तमान में वैदिक परम्परा को ठीक ढंग से न समझ पाने के कारण समाज को आघात पहुंचा है। लोग एक दूसरे से आगे बढ़ने की होड़ में अकल्याणकारी मार्गों का चयन कर रहे हैं। परिणामत: आपसी ईर्ष्या, द्वन्द व द्वेषादि को बढ़ावा मिल रहा है। अशांति का वातावरण निर्मित हो रहा है जो न केवल मानव के लिए अपितु जीव मात्र के लिए अहितकर है। इन समस्त तथ्यों का रहस्य समझकर वेदों में इन द्वन्द्वों के बढ़ने के मूल स्रोतों पर विचार किया गया। वेदों के अनुसार व्यक्ति वही विकसित हो सकता है जो सूर्य एवं चन्द्रमा की भांति अबाध गति से सबके साथ-साथ चलता है। यह सर्वांगीण विकास का ज्वलन्त उदाहरण है। एकांगी विकास को वेद स्वीकार नहीं करते क्योंकि यह विकास असंतुलन उपस्थित करता है। सामाजिक सन्तुलन **'हेतु सं ग्रमेमहि'** का सिद्धांत हृदयंगम करना होगा। ऋग्वेद कहता है कि कल्याणकारक, न दबने वाले, पराजित न होने वाले, उच्चता को पहुंचाने वाले शुभ कर्म चारों ओर से हमारे पास आवें। प्रगति को न रोकने वाले, प्रतिदिन सुरक्षा करने वाले देव हमारा सदा संवर्धन करने वाले हों। सरल मार्ग से जाने वाले देवों की कल्याणकारक सुबुद्धि तथा देवों की उदारता हमें प्राप्त होती रहे। हम देवों की मित्रता करें, देव हमें दीर्घ आयु हमारे दीर्घ जीवन के लिए दें। ये सभी वैदिक मन्त्रार्थ कल्याणकर मानव जीवन के लिए अत्यंत ही विचारणीय हैं। देवों की उदारता से तात्पर्य है कि यदि उदारता में कहीं दानवत्व छिपा हुआ है तो वह उदारता ग्रहण योग्य नहीं है। वही उदारता हमें ग्रहण करना चाहिए, जिसमें कल्याण निहित हो। हमारी मित्रता भी उच्च विचारवान व्यक्ति के साथ हो ऐसा प्रयास करना चाहिए। यदि निम्न विचारक व्यक्ति के साथ हमारी मित्रता होगी तो यह कल्याणयुक्त नहीं हो सकती है। इस प्रकार से समस्त जनों के कल्याण की मूल भावना वेदों में अन्तर्निहित है। जिसे उज्ज्वल भविष्य हेतु आत्मसात करने की आवश्यकता है।